



52745

52746

... ॥ यदुष्टं कल्पनं कर्तुं न भवति ॥
 ... ॥ ३५ ॥ कल्पयन्निवृत्तः ॥ ३५ ॥
 ... ॥ ३६ ॥ कल्पयन्निवृत्तः ॥ ३६ ॥
 ... ॥ ३७ ॥ कल्पयन्निवृत्तः ॥ ३७ ॥
 ... ॥ ३८ ॥ कल्पयन्निवृत्तः ॥ ३८ ॥
 ... ॥ ३९ ॥ कल्पयन्निवृत्तः ॥ ३९ ॥
 ... ॥ ४० ॥ कल्पयन्निवृत्तः ॥ ४० ॥
 ... ॥ ४१ ॥ कल्पयन्निवृत्तः ॥ ४१ ॥
 ... ॥ ४२ ॥ कल्पयन्निवृत्तः ॥ ४२ ॥
 ... ॥ ४३ ॥ कल्पयन्निवृत्तः ॥ ४३ ॥
 ... ॥ ४४ ॥ कल्पयन्निवृत्तः ॥ ४४ ॥
 ... ॥ ४५ ॥ कल्पयन्निवृत्तः ॥ ४५ ॥
 ... ॥ ४६ ॥ कल्पयन्निवृत्तः ॥ ४६ ॥
 ... ॥ ४७ ॥ कल्पयन्निवृत्तः ॥ ४७ ॥
 ... ॥ ४८ ॥ कल्पयन्निवृत्तः ॥ ४८ ॥
 ... ॥ ४९ ॥ कल्पयन्निवृत्तः ॥ ४९ ॥
 ... ॥ ५० ॥ कल्पयन्निवृत्तः ॥ ५० ॥

[illegible]

हं यद्वाभवाप्येव विमर्शः, तिस्रः पुंस्त्वमदीयस्य भवेत्तमसि ननु चे

[illegible]

[illegible]

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

SERIES